प्रबन्ध का कार्यात्मक क्षेत्र

1. सेविवर्गीय प्रबन्ध
2. वित्तीय प्रबन्ध
3. विपणन प्रबन्ध
4. विज्ञापन प्रबन्ध
5. उत्पादन प्रबन्ध

डा0 नज़ाकत हुसैन
एसोसिएट प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय
भोजपुर मुरादाबाद

घोषणा

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्य के लिये है। आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबन्धित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी ओर के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगें ओर इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिये ही करेंगें। इस ई–कन्टेन्ट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

सेविवर्गीय प्रबन्ध

संस्था में विभिन्न स्तरों पर कर्मचारियों की व्यवस्था करने को सेविवर्गीय प्रबन्ध कहते है। सेविवर्गीय प्रबन्ध का प्रमुख उद्‌देश्य संगठन में विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहे विभिन्न कर्मचारियों को अपना अपना निर्धारित कार्य प्रभावशाली ढंग से करने के योग्य बनाना है। इससे कर्मचारियों की कार्यकारी दशाओं में भी सुधार आता है। सेविवर्गीय प्रबन्ध का लक्ष्य मानव संसाधनों का कुशलतम उपयोग करना है।

सेविवर्गीय प्रबन्ध के कार्यः–

1. आवश्यक संख्या में योग्य कर्मचारियों की नियुक्ति
2. कर्मचारियों का प्रशिक्षण, दक्षता विकास एंव समुचित पदोन्नति
3. पारिश्रामिक नीति निर्माण,सहभागिता योजना एंव अन्य मौर्दिक प्रोत्साहन योजनाएं
4. ऊंचा मनोबल उठाना, अनुशासन स्थापित करना, शिकायत निवारण करना व प्रबन्ध में सहभागिता दिलाना
5. उपक्रम में कर्मचारियों को स्वास्थय, चिकित्सा, मनोरंजन व आवास आदि की सुविधा उपलब्ध कराना

वित्तीय प्रबन्ध

वित्तीय प्रबन्ध उपक्रम के वित्त तथा वित्तीय क्रियाओं के सफल तथा कुशल प्रबन्ध के लिए उत्तरदायी होता है। इसमें पूंजी, रोकड़ प्रवाह, साख, मूल्य एंव लाभ नीतियां, निष्पत्ति नियोजन एंव मूल्यांकन तथा बजटरी नियन्त्रण नीतियां एंव प्रणालियां शामिल होती है।

वित्तीय प्रबन्ध के उद्देश्यः– वित्तीय प्रबन्ध का प्रथम महत्वपूर्ण उद्देश्य संस्था के लिए पर्याप्त तरलता एंव पूंजी की व्यवस्था करना होता है। संगठन के लाभ को अधिकतम करना तथा संगठन की सम्पदा को अधिकतम करना भी वित्तीय प्रबन्ध का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

विपणन प्रबन्ध

विपणन में उन समस्त क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है जो वस्तुओं के उत्पादन से पूर्व आरम्भ होती है और उनके उपभोग के दौरान तक जारी रहती है। उपभोक्ताओं की सन्तुष्टि विपणन प्रबन्ध का प्रधान लक्ष्य होती है।

विपणन के कार्यः– वस्तुओं का नियोजन एंव विकास, विक्रय, वैज्ञानिक क्रय, भण्डारण, परिवहन, प्रमापीकरण एंव श्रेणीकरण, पैकिंग, ब्राण्डिंग, मूल्य निर्धारण, वित्त व्यवस्था तथा विक्रय उपरान्त प्रदान की जाने वाली समस्त सेवाएं

विज्ञापन प्रबन्ध

विज्ञापन एक ऐसा माध्यम और उपकरण है जिसके द्वारा नवीन वस्तु या सेवा के लिए मांग पैदा की जाती है, प्रचलित वस्तुओं की मांग में वृद्धि की जाती है और निर्माता की ख्याति को बढ़ाया जाता है। विज्ञापन के कार्य अग्रवत् हैं।

1. नई वस्तु का परिचय कराना व मांग का सृजन करना व उसे बढ़ाने का कार्य करना
2. विक्रय सम्बन्धी समस्त कार्य करना
3. ब्राण्ड वैल्यू को स्थापित करना
4. उपभोक्ताओं, मध्यस्थों एंव विक्रेताओं की सहायता करना
5. उपभोक्ताओ को नई जानकारी देना तथा पुरानी जानकारी स्मरण कराना
6. व्यावसायिक जोखिम को कम करना

उत्पादन प्रबन्ध

उत्पादन प्रबन्ध, उत्पादन से सम्बन्धित समस्त क्रियाकलापों के नियोजन, संगठन, समन्वय एंव नियन्त्रण की प्रक्रिया हैं। इसकी सहायता से मानव संसाधन एंव भौतिक संसाधनों का सर्वोत्तम विदोहन किया जाता है।

उत्पादन प्रबन्ध के कार्यः–

1. उत्पादन का नियोजन करना
2. उत्पादन पर नियन्त्रण बनाए रखना
3. संयन्त्र का सही अभिविन्यास करना व उनका कुशल उपयोग करना
4. श्रम सम्बन्धी लागतों को कम करने का प्रयास करना
6. स्कन्ध की मात्रा पर नियन्त्रण करना
7. उत्पादन की गुणवत्ता पर नियन्त्रण करना
8. उत्पादन के सर्वोत्तम विकल्प का चयन करना

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1. व्यावसायिक प्रबन्ध के सिद्वान्त, डा0 आर सी गुप्ता, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा